International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 6, June 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com, editor@aarf.asia

शैली विज्ञानः सीमाएँ एवं सम्भावनाएँ

डॉ॰ कृष्ण लाल ढींगरा

भाषा के अध्ययन पर आधारित होन के कारण डा॰ नगेन्द्र शैली–विज्ञान की विश्लेषण क्षमता को भाषा तक सीमित मानते हैं। "शैली–विज्ञान का अधिकार–क्षेत्र भी भाषिक स्तर तक ही सीमित है। यह संपूर्ण साहित्य अथवा व्यापक अर्थ में साहित्य कला तथा साहित्य के समग्र रूपविधान का अध्ययन प्रस्तुत करने का दावा चाहे करे पर वास्तव में उतनी क्षमता इसमें नहीं है। इसलिए शैलीविज्ञान की सही परिभाषा उसका सही अर्थ और क्षेत्र–विस्तार यही है कि वह साहित्य के भाषिक विधान का रूपात्मक अध्ययन है।"(1) पर साथ ही वे शैलीविज्ञान की क्षमता के प्रति आशावान है। उनका मंतव्य है कि इसमें शैलीवैज्ञानिक आलोचक को अधिक संवेदनशील होकर भाषिक विश्लेषण के माध्यम से रचना की आत्मा तक पहुँचना होगा क्योंकि मात्र सतही या स्थूल भाषिक विश्लेषण के आधार पर रागात्मक तत्वों साक्षात्कार नहीं किया जा सकता। अतः "शैलीविज्ञान को अपनी सीमाओं का विस्तार कर साहित्य के चैतन्य पक्षों–रागात्मक, दार्शनिक, सामाजिक पक्षों – के साथ सौहार्द स्थापित करना होगा।(2)

लेकिन डॉ॰ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव रचना के साथ शैलीविज्ञान की भाषागत संपृक्ति के साथ–साथ, भावगत संपृक्ति का भी पूर्ण समर्थन करते है – "शैलीविज्ञान" न तो "रूप से विलग कथ्य" को ही स्वीकार करता है और न ही "कथ्य से असंपृक्त रूप"

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

को ही। उनके मत में काव्यकृति में रूप और कथ्य इस प्रकार आपस में घुले–मिले रहते हैं[3] – कि एक के अभाव में दूसरे की सत्ता की असिद्ध हो जाती है। इस प्रकार रचना के कथ्य और रूप के अलगाव को स्वीकार नहीं किया जा सकता। "संवेदना की बोधात्मक प्रतीति का रास्ता वस्तुतः भाषा का रास्ता है। शैलीविज्ञान साधन के विश्लेषण के माध्यम से साध्य तक पहुँचने की रीति को स्वीकार करने के कारण अपनी विश्लेषण प्रणाली में भाषाविज्ञान के वस्तुवादी दृष्टिकोण और प्रविधि का सहारा लेता है।[4]

शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के विभिन्न धरातल

आधुनिक शैली वैज्ञानिक अध्ययन के अंतर्गत रचना की समग्र संरचना में निहित विशिष्ट प्रभावोत्पादक शैलीगत तत्वों का अध्ययन किया जाता है। शैलीगत तत्वों के अंतर्गत चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत विधान इत्यादि को स्वीकार किया जाता है। शैलीविज्ञान इन्हीं तत्वों के आधार पर कृति की भाषिक विशिष्टताओं का अध्ययन करते हुए उसके मूल कथ्य तक पहुंचता है।

चयन पर आधारित प्रयोगों का विश्लेषण शैलीविज्ञान का प्रमुख क्षेत्र है। साहित्यिक कृति में विभिन्न शैलीगत उपकरणों का चयन होता है। भाषा में एक ही तथ्य को व्यक्त करने के लिए कई भाषिक प्रतीक हो सकते है। जैसेः गगन, आकाश, आसमान, व्योम, नभ – ये सब भाषिक संकेत एक ही तथ्य को घोषित करते हैं पर वास्तव में अर्थ की व्यापकता और सूक्ष्मता की दृष्टि से ये एक दूसरे से भिन्न है। रचनाकार कथ्य की आंतरिक आवश्यकता के अनुसार इनमें से किसी एक का चयन करता है और उसके द्वारा अपने अभीष्ट अर्थ को समग्र रूप में अभिव्यक्त करता है।

साहित्यिक रचना में चयन – ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि भाषा के सभी स्तरों पर चयन की सोद्देश्यता और सार्थकता का अध्ययन करता है।

साहित्यिक भाषा की विशिष्टता का आधारभूत तत्व विचलन है। रचनाकार नियमबद्ध सामान्य भाषा की असमर्थताओं का अतिक्रमण करता है। इस अतिक्रमण अथवा विचलन के द्वारा वह अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करने में समर्थ विशिष्ट भाषा का प्रयोग करता है। विचलन भी भाषा के सभी स्तरों पर संभव है पर मात्र चमत्कार उत्पन्न करने के लिए किए गए सायास विचलन की कोई सार्थकता नहीं होती। वस्तुतः विशिष्ट अनुभवों को व्यक्त करने की प्रक्रिया में होने वाला विचलन एक सहज स्वाभाविक स्थिति है। इस प्रकार के विचलित प्रयोग किसी विशिष्ट अर्थ पर बल देने या विशेष प्रभाव उत्पन्न करने में सशक्त माध्यम सिद्ध होते हैं।

समानांतरता की संकल्पना भी शैली वैज्ञानिक अध्ययन में विशेष महत्व रखती हैं। इसके अंतर्गत समान या विरोधी भाषिक इकाइयों के समानांतरता बाह्य तथा आंतरिक दोनों प्रकार की होती है अर्थात् भाषा की सरंचना तथा अर्थ– दोनों स्तरों पर समान या विरोधी भाषिक इकाइयों का आवर्तित प्रयोग किया जा सकता है। समानांतरता का अध्ययन भी – ध्वनि, शब्द, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य आदि भाषा के सभी स्तरों पर होता है। अप्रस्तुत विधान में प्रस्तुत विषय और अप्रस्तुत के मध्य साम्य तत्व पर बल दिया जाता है क्योंकि इसी के द्वारा प्रस्तुत विषय अधिक स्पष्ट होता है और साथ ही भाषिक विधान में आलंकारिक सौंदर्य का समावेश होता है। अप्रस्तुत विधान की सत्ता मात्र अलंकारों तक सीमित नहीं होती वरन् जहां कहीं साम्य तत्व के आधार पर प्रस्तुत के सौंदर्य में वृद्धि होती है वहीं अप्रस्तुत विधान की सत्ता होती है। इस दृष्टि से बिंब, प्रतीक, मुहावरा, मानवीकरण इत्यादि सभी अप्रस्तुत विधान के अंतर्गत समाहित हो जाते हैं। किसी रचना के अप्रस्तुत विधान

के वैशिष्ट्य का अध्ययन रचनाकार की मानसिकता तथा दृष्टिकोण की विशिष्टता को भी सूचित करता है। इनके अतिरिक्त रचना में निहित ध्वन्यात्मक प्रभाव का ध्वनीय शैली विज्ञान की दृष्टि से भी अध्ययन होता है।

शैली वैज्ञानिक अध्ययन की कोई एक ही निश्चित प्रणाली सभी रचनाओं के संदर्भ में प्रयुक्त नहीं हो सकती। वस्तुतः साहित्य की भाषा सामान्य अर्थ को प्रकाशित करने वाली सामान्य भाषा नहीं होती, वह एक साथ कई जटिल अर्थों को प्रकाशित करने वाली बहुकेद्रिक विशिष्ट भाषा होती है। उसकी यह विशिष्टता कथ्य की आवश्यकता, लेखक के व्यक्तित्व के प्रभाव आदि कई तथ्यों पर आधारित होती है। इसी विशिष्टता के कारण विभिन्न कृतियों की रचनात्मक भाषा मूलतः समान होते हुए भी अपनी संप्रेषणियता और संरचना में पूर्णतः भिन्न होती है। अतः सभी प्रकार की रचनाओं के लिए एक निश्चित अर्थ बताने वाली निश्चित बनी बनाई प्रणाली का प्रयोग नहीं किया जा सकता। रचना की शैलीगत विशिष्टता के अनुसार उसकी अध्ययन प्रणाली भी विशिष्ट होनी चाहिए तभी एक रचना शैलीगत और साहित्यिक सौंदर्य का समग्रतः उद्घाटन कर सकती है।

"शैली विज्ञान का लक्ष्य कृति में निहित अभिव्यक्तिगत विशेषताओं का उद्घाटन करना है। शैली विज्ञान भी साहित्य को समझने–समझाने की एक दृष्टि है जो शैली के साक्ष्य पर एक और यादृच्छिक कृति की संरचना और गठन पर प्रकाश डालती है तो दूसरी और कृति का विश्लेषण करते हुए उसमें अंतनिहित साहित्यिकता का उद्घाटन करती है।

सारतः भाषा के माध्यम से साहित्य का अध्ययन करते हुए शैली विज्ञान साहित्यिक मूल्यांकन की नयी संभावनाओं और नये आयामों के द्वार खोलता है। निश्चय ही शैलीविज्ञान के लिए यह एक चुनौती है कि किस प्रकार 'आत्म' या आत्मा का वो तत्व जिस पर साहित्य के भवन की नींव टिकी है। वो तत्व इसके विश्लेषण में कैसे एकाकार हो। कैसे अपनी संपृक्ति प्रमाणित करें? इस पर साहित्य चेताओं और भाषा वैज्ञानिकों का चिंतन और शोध करना ही, इसको वांछित पूर्णता की ओर बढ़ा सकेगा।

संदर्भ ग्रंथः

1. *डॉ॰ नगेन्द्रः शैलीविज्ञान, पृष्ठ–22*
2. *डॉ॰ नगेन्द्रः शैलीविज्ञान, पृष्ठ–50*
3. *डॉ॰ रवीन्द्र श्रीवास्तवः संरचनात्मक शैलीविज्ञान, पृष्ठ–24*
4. *डॉ॰ रवीन्द्र श्रीवास्तवः संपादकीय, शैलीविज्ञान, लेखक डॉ॰ सुरेश कुमार पृष्ठ–2*

एसोसिएट प्रोफ़ेसरः हिंदी विभाग
दिल्ली कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एण्ड कॉमर्स
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
Email: drdhingra@gmail.com